प्रताप कुमार मिश्र

बारिश

कहते हैं—
इस बार बारिश अच्छी होगी
नरम-नरम घासें उग आएँगी इन दरारों में,
महुआ की अनछुई कोंपलें
फिर छुएँगी अछूत नवयौवनाओं के उन
कपोलों को
कानों से लटकती हुईं,
झूले इस बार बरहमस्थान वाली गाछी में
नहीं लगेंगे; क्योंकि तब—
साँप अपनी बाँबियों से निकल पड़ेंगे
मेढकों की टर्राहट को सुनकर।

कहते हैं—
इस बार बारिश अच्छी होगी
रोपनी में ब्लॉक का दिया बीया
नहीं रोपा जाएगा
न जाने किस मशीन का बना है
कितना भी गोबर डालो उगता ही नहीं,
खेतों में कमर भर पानी तो लग ही जाएगा
मुसहरिनें—
घुटनों तक साड़ियाँ उठाए
रोपेंगी धान; बिना घूँघट हटाए
कजरी गाती हुईं
मेघों की थाप पर
और आँटी बाँधते मुसहर
देख लिया करेंगे उन्हें कभी-कभार
आँखें बचाकर।

कहते हैं
इस बार बारिश अच्छी होगी
सावनी फुहार में भीगना होगा सबको
क्योंकि पिछली बार धान कहाँ हुआ था
कि घर छारा जाता
टाट बनाया जाता;
इस बार डोके और केकड़े
खूब मिलेंगे खेतों में
पानी के सोतों से बह आई मछलियाँ
खूब फँसेंगी बंसियों के काँटों में,
कहते हैं—
इस बार केकड़ों की चटनी
बड़ी स्वादिष्ट बना करेगी
चलो-चलो
खेतों में चलते हैं
भीगते-भागते
केकड़ों को पकड़ते हैं।

□

प्रतीक्षा

किसी के आने की आहट पे
वह चौंकती,
खुश होती,
शायद यह वही हो
जिसका है उसे इंतजार
कई महीनों से,
कई सालों से,
सदियों से,
हर दिन हर बार,
जलती-चिलचिलाती धूप में,
सर्द-ठंड-छाँव में,
सूनी-अकेली लंबी रात में,
दूर गाँव की बस्ती
रास्ते के किनारे,
पार्क के बगल में।
यह उसकी रोज की दिनचर्या थी,
है
और रहेगी तब तक
जब तक
नहीं आ जाती इसके नाम
उसके हाथों लिखी कोई चीठिका,
यों ही—
चौंकती
खुश होती रहेगी पत्र पेटिका।

□

वीथिका

कभी तुम्हारे 'तुम' ने
तो कभी मेरे 'मैं' ने;
हम दोनों के नजदीकी फासलों में
निभाई है अहम भूमिका,
अब
न तो 'तुम' तुम रहे
न ही 'मैं' मैं;
शेष रही बस
लंबे फासले की—
एक यादगार वीथिका।

□

संस्कृत विभाग,
बनारस हिंदू विश्वविद्यालय,
वाराणसी